[नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत CBSE द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यक्रम एवं NCERT द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यपुस्तकों पर आधारित]

संजीव रिफ्रेशर

संस्कृत

रुचिरा (तृतीयो भागः)

कक्षा 8 के विद्यार्थियों के लिए

मुख्य विशेषताएँ

- पाठ परिचय
- मूल पाठ, अन्वय, कठिन शब्दार्थ एवं हिन्दी अनुवाद
- पठित अवबोधनम्
- पाठ्यपुस्तक के सभी प्रश्न
- अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न
- व्याकरण
- रचनात्मक कार्य
- अपठित–बोधनम्

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

जयपुर

मूल्य : ₹ 190.00

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

★ ★ ★ ★

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं–
  email : sanjeevcompetition@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग, संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीक या तरीके–इलेक्ट्रोनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है।
- हमने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता या त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

प्रथमः खण्डः

रुचिरा (तृतीयो भागः)

	मङ्गलम्	1–2
1.	सुभाषितानि	3–13
2.	बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता	14–24
3.	डिजीभारतम्	25–36
4.	सदैव पुरतो निधेहि चरणम्	37–45
5.	कण्टकेनैव कण्टकम्	46–58
6.	गृहं शून्यं सुतां विना	59–75
7.	भारतजनताऽहम्	76–87
8.	संसारसागरस्य नायकाः	88–97
9.	सप्तभगिन्यः	98–111
10.	नीतिनवनीतम्	112–123
11.	सावित्री बाई फुले	124–136
12.	कः रक्षति कः रक्षितः	137–152
13.	क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमिः	153–165
14.	आर्यभटः	166–175

द्वितीयः खण्डः

व्याकरणभागः

(परिशिष्टसहितम्)

1.	वर्ण-विचारः	176–178
2.	सन्धि-प्रकरणम्	178–184
3.	उपसर्गः	184–190
4.	प्रत्ययज्ञानम्	190–205
5.	शब्दरूपाणि	205–222
6.	संख्याज्ञानम्	222–230

7.	धातुरूपाणि	230–241
8.	समास–ज्ञानम्	241–250
9.	कारक तथा उपपद विभक्तियाँ	250–258
10.	अव्यय–ज्ञानम्	258–264
11.	समय–लेखनम्	264–269
12.	अशुद्धि–संशोधनम्	269–278

तृतीयः खण्डः

रचना–भागः

1.	चित्राधारित–वर्णनम्	279–287
2.	संस्कृत में लघु रचना–कहानी	287–289
3.	निबन्ध–लेखनम्	289–292
4.	अनुच्छेद–लेखनम्	292–294
5.	पत्र–लेखनम्	294–300
6.	संवाद–लेखनम्	300–303

अपठित–अवबोधनम्

	अपठित–अवबोधनम्	304–310

संस्कृत–कक्षा-8

प्रथमः खण्डः

रुचिरा (तृतीयो भागः)

मङ्गलम्

(1)

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं
तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। 1।।

–शुक्लयजुर्वेदः (34.1)

अन्वयः–जाग्रतः यत् दैवं दूरम् उपैति, तथैव सुप्तस्य तदु एति, (तत्) दूरङ्गमं, ज्योतिषाम् एकं ज्योतिः (अस्ति)। तत् मे मनः शिवसङ्कल्पम् अस्तु।

कठिन-शब्दार्थ–**जाग्रतः** = जागते हुए का। **यत्** = जो। **दैवम्** = आत्मस्वरूप मन। **उदैति** = जाता है। **सुप्तस्य** = सोए हुए का। **तदु** = वह ही। **एति** = जाता है। **दूरङ्गम्** = दूर तक जाने वाला। **ज्योतिषाम्** = प्रकाशक (इन्द्रियों) का। **मे** = मेरा। **शिवसङ्कल्पम्** = शुभ विचारों वाला। **अस्तु** = होवे।

हिन्दी अनुवाद–जागते हुए का जो यह आत्मस्वरूप मन दूर तक जाता है, उसी प्रकार सोते हुए व्यक्ति का वही (मन दूर तक) जाता है। (वह मन) दूर तक जाने वाला एवं प्रकाशक इन्द्रियों (तेजसमूह) का एकमात्र प्रवर्तक है। वह मेरा मन शुभ विचारों वाला होवे।

(2)

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्या-
न्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। 2।।

–शुक्लयजुर्वेदः (34.6)

अन्वयः–यत् (मनः) मनुष्यान् सुषारथिः अश्वान् इव नेनीयते, अभीशुभिः वाजिनः इव (नेनीयते)। तत् हृत्प्रतिष्ठं अजिरं जविष्ठं मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

कठिन-शब्दार्थ–**सुषारथिः** = सुन्दर (श्रेष्ठ) सारथि। **अश्वान्** = घोड़ों को। **नेनीयते** = इधर-उधर ले जाता है। **अभीशुभिः** = लगामों के द्वारा। **वाजिनः** = घोड़ों को। **हृत्प्रतिष्ठम्** = हृदय में स्थित। **अजिरम्** = जरा (वृद्धावस्था) से रहित। **जविष्ठम्** = वेगवान्।

हिन्दी अनुवाद–जिस प्रकार श्रेष्ठ सारथि घोड़ों को इधर-उधर ले जाता है और लगामों के द्वारा घोड़ों को नियन्त्रित करता है, उसी प्रकार जो मन मनुष्यों को इधर-उधर ले जाता है, वह हृदय में स्थित, जरा रहित और वेगवान मेरा मन शुभ विचारों वाला होवे।

हिन्दी रूपान्तर (पद्यानुवाद)

जो रहता है जाग्रत और दूर-दूर तक जाता है,
सोया रह कर भी ऐसे ही जा कर वापस आता है।
दूर-दूर वह जाने वाला सब तेजों का ज्योतिनिधान
सदा समन्वित शुभसङ्कल्पों से वह मन मेरा बने महान्।। 1।।

जो जन-जन को बागडोर से इधर-उधर ले जाता है,
चतुर सारथी ज्यों घोड़ों को इच्छित चाल चलाता है।
सदा प्रतिष्ठित हृदयदेश में अजर और अतिशय गतिमान्
सदा समन्वित शुभसङ्कल्पों से वह मन मेरा बने महान्।। 2।।

✣ ✣ ✣

प्रथमः पाठः
सुभाषितानि
(मधुर वचन)

1

पाठ-परिचय–'सुभाषित' शब्द 'सु + भाषित' इन दो शब्दों के मेल से सम्पन्न होता है। सु का अर्थ सुन्दर, मधुर तथा भाषित का अर्थ वचन है। इस तरह सुभाषित का अर्थ सुन्दर/मधुर वचन है। प्रस्तुत पाठ में सूक्तिमञ्जरी, नीतिशतकम्, मनुस्मृतिः, शिशुपालवधम्, पञ्चतन्त्रम् से रोचक और विचारपरक श्लोकों को संगृहीत किया गया है।

मूलपाठस्य अवबोधनम्–(मूलपाठ, अन्वय, शब्दार्थ, हिन्दी-अनुवाद, भावार्थ एवं पठितावबोधनम्)

(1)

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
सुस्वादुतोयाः प्रभवन्ति नद्यः
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः।। 1।।

अन्वयः–गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति, ते (गुणाः) निर्गुणं प्राप्य दोषाः भवन्ति। (यथा) नद्यः सुस्वादुतोयाः प्रभवन्ति, समुद्रम् आसाद्य (ताः) अपेयाः भवन्ति।

कठिन-शब्दार्थ–**गुणज्ञेषु** = गुणवानों में। **निर्गुणम्** = गुणहीन को। **प्राप्य** = प्राप्त करके। **नद्यः** = नदियाँ। **सुस्वादुतोयाः** = स्वादिष्ट जल वाली। **प्रभवन्ति** = उत्पन्न होती हैं। **समुद्रम् आसाद्य** = समुद्र में मिलकर। **अपेयाः भवन्ति** = पीने योग्य नहीं होतीं।

हिन्दी अनुवाद–गुण गुणवान् व्यक्तियों में ही गुण के रूप में होते हैं, वे (गुण) ही गुणहीन को प्राप्त होने पर दोष हो जाते हैं। जैसे नदियाँ स्वादिष्ट जल वाली उत्पन्न होती हैं (किन्तु) समुद्र में मिलकर (वे) पीने योग्य नहीं होती हैं।

भावार्थ–प्रस्तुत श्लोक में गुणवान् के महत्त्व को बताते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार नदी का जल मीठा एवं पीने योग्य होता है किन्तु समुद्र में मिलने पर वही जल खारा एवं पीने योग्य नहीं रहता है, उसी प्रकार गुण भी गुणवान् में ही गुण के रूप में रहते हैं किन्तु वे ही गुण गुणहीन व्यक्ति को प्राप्त करके दोष बन जाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि संगति के अनुसार ही गुण-दोष बनते हैं।

पठितावबोधनम्–

निर्देशः–उपर्युक्तं पद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–

प्रश्नाः–

I. एकपदेन उत्तरत–
(i) गुणाः केषु गुणाः भवन्ति?
(ii) सुस्वादुतोयाः काः प्रभवन्ति?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत–
गुणाः कम् प्राप्य दोषाः भवन्ति?

III. भाषिककार्यम्–

(i) 'गुणाः' इति पदस्य विलोमपदं श्लोके किं प्रयुक्तम्?
(अ) निर्गुणाः (ब) दोषाः (स) अपेयाः (द) तोयाः

(ii) 'प्रभवन्ति' इति क्रियापदस्य अत्र कर्तृपदं किम्?
(अ) गुणाः (ब) दोषाः (स) समुद्रम् (द) नद्यः

(iii) 'मिलित्वा' इति पदस्य श्लोके समानार्थकपदं किं प्रयुक्तम्?

(अ) आसाद्य (ब) निर्गत्य (स) उत्पाद्य (द) भूत्वा

(iv) 'ते' इति सर्वनामपदस्य स्थाने संज्ञापदं किम् अस्ति?

(अ) दोषाः (ब) नद्यः (स) गुणाः (द) अपेयाः

उत्तराणि– I. (i) गुणज्ञेषु। (ii) नद्यः।

II. गुणाः निर्गुणं प्राप्य दोषाः भवन्ति।

III. (i) (ब) दोषाः। (ii) (द) नद्यः।

(iii) (अ) आसाद्य। (iv) (स) गुणाः।

(2)

साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः
तद्भागधेयं परमं पशूनाम्॥ 2॥

अन्वयः–साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः पुच्छविषाणहीनः साक्षात् पशुः (भवति)। तृणं न खादन् अपि जीवमानः, तद् पशूनां परमं भागधेयम्।

कठिन-शब्दार्थ–**पुच्छविषाणहीनः** = पूँछ और सींग के बिना। **तृणं** = घास। **खादन् अपि** = खाते हुए भी। **जीवमानः** = जिन्दा रहता हुआ। **भागधेयम्** = सौभाग्य है। **विहीनः** = रहित। **परमम्** = परम/बड़ा।

हिन्दी अनुवाद–साहित्य, संगीत और कला से रहित (मनुष्य) पूँछ और सींग के बिना साक्षात् पशु है। घास न खाते हुए भी वह (मनुष्य) जीवित है, यह पशुओं का परम सौभाग्य है। अर्थात् यदि वह घास भी खाने लगे तो पशुओं को वह घास भी मिलना कठिन हो जाता।

भावार्थ–प्रस्तुत श्लोक में साहित्य, संगीत एवं कला से रहित मनुष्य को साक्षात् पशु बताया गया है। ऐसे मनुष्य में केवल यह भेद है कि उसके पूँछ एवं सींग नहीं होते हैं तथा वह घास नहीं खाता है। यह पशुओं का सौभाग्य है, अन्यथा उन्हें घास भी खाने को प्राप्त नहीं होगी।

पठितावबोधनम्–

प्रश्नाः–

I. एकपदेन उत्तरत–

(i) पशुतुल्यः मानवः किं न खादन् अपि जीवति?

(ii) तद् केषां परमं भागधेयम्?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

कीदृशः जनः साक्षात् पशुः भवति?

III. भाषिककार्यम्–

(i) 'भागधेयम्' इति पदस्य श्लोके विशेषणपदं किं प्रयुक्तम्?

(अ) परमं (ब) जीवमानः (स) पशुः (द) खादन्

(ii) 'सहितः' इति पदस्य अत्र विलोमपदं किम्?

(अ) साक्षात् (ब) परमं (स) विहीनः (द) तृणम्

(iii) 'शृङ्गः' (सींग) इत्यर्थे श्लोके किं पदम्?

(अ) पुच्छः (ब) हीनः (स) तृणम् (द) विषाणः

(iv) 'पशूनाम्' इति पदे का विभक्तिः?

(अ) चतुर्थी (ब) षष्ठी (स) द्वितीया (द) पंचमी

उत्तराणि– I. (i) तृणम्। (ii) पशूनाम्।

II. साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः जनः साक्षात् पशुः भवति।

III. (i) (अ) परमं। (ii) (स) विहीनः।

(iii) (द) विषाणः। (iv) (ब) षष्ठी।